

१०६

१

॥ श्रीरामलीला यज्ञवोध्य प्रमाण ॥



Joint Project of the Rajiv Gandhi Sanshodhan Mandai, Bhule and the Yashwantrao Chhatrapati Sansad Pustakalaya, Mumbai

(2)  
॥१०॥

५

श्रीगजबदनायनमः नमुश्चिभुरब्रह्मनदं ॥ जो जगदं कुमुकं द ॥ जो नीज जनतारक प्रसीष ॥ कैव  
व व्यदाता सुखव्यी ॥ १ ॥ जायो गदीपाचे नीघान ॥ जो वेराग्यवलीचे सुमन ॥ कीवेदात स मुद्री नामीन ॥  
आमृजीवनीतलपतसे ॥ २ ॥ कीतोधर्वमेसुवेदाखर ॥ कीदयाकासीचाजठधर ॥ कीद्धुपासागरी  
चे सुदर ॥ दीध्यरह प्रदर्ले ॥ ३ ॥ कीशातीचे चद्मंडळ ॥ कीसद्वेजसुर्यकेवक ॥ कीसह सरोवरीचे  
मछ ॥ कीवासुफळ अनदक ॥ ४ ॥ कीसमेचापत्तपांकीनीवीकीरहीव्यचंदन ॥ मुमुक्षफणीवरीवे  
सुन ॥ सर्वदाहीवैसले ॥ ५ ॥ कींधर्वस्त्रभागी ॥ थीजक तेथीचालोट अतीनीमळ ॥ मलवीरकज्ञान  
संकळ ॥ तीर्थराजा अवतरला ॥ ६ ॥ ऐसामाहार जस दुर्जनाथ ॥ याशीपरीसाचादेउद्ग्रीष्णात ॥  
तोलोहाचे सुवणीकेरील ॥ परीजापणांजे सेनकरावे ॥ ७ ॥ सुरभी धीता मणि साचार ॥ कल्मदृक्ष  
पृष्णावउहार ॥ तरीतो कल्पीकेंचदेगार ॥ परीजापणांजे सेनकरावे ॥ ८ ॥ जनक जननी वीतुष्णमा

र

॥ ११ ॥

५

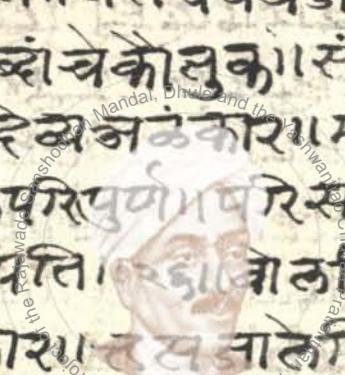
कैश्चि ॥ द्यावी जाता सद्गुरु रीप ते वीउ नुत रार्जी श्येसी ॥ ह्राज अमर खा री दुरकरी ॥ १ ॥  
 चौर याक्षी कक्षयोनी जमुंपा ॥ सवाटी द्विज सती माय बाप ॥ परी श्री गुरु ची हृष्ण स्प ॥ नौ झोज भी के  
 चातो ॥ १० ॥ लोभ वै वै द्वै द्वै द्वै द्वै द्वै द्वै ॥ आज्ञा न ती गीर छेद करि वाकार ॥ कीदुःख  
 पर्वत अंजन पुरंदर ॥ बोध बज सब के करो ॥ ११ ॥ ते सामाहारौ गुरु जाथ त्या सद्गीष्व वीरस्क  
 श्राग येत ॥ भ्रमर कुमल को रीवै सत ॥ ते सेतुं तीत चरणी जे ॥ १२ ॥ की स्फुली गभी के अ  
 ग्नित ॥ की जल बीदुप डे सरोवरेत ॥ की सरीत सागरि द्वै यूहोत ॥ है सै भस्क गुरु चरणी ॥ १३ ॥  
 की मुसेत जादी ले अंकं कार ॥ की जँकी वीरा की जल गार ॥ कौं तरंग मोडुन साचार ॥ ये कनीर उर  
 ल जै सं ॥ १४ ॥ जे सागुरु चरणी भी कोन ॥ गुरु दा स्य करी तीज नुदीन ॥ श्री राघ्वी माडी गुमभा  
 या ॥ वीक्ष्मै जै सा सर्वदां ॥ १५ ॥ की जाहु वीत मन कणी की तीर्थी ॥ की भी मेतच द्रभा गवी

३

१२।।

राजत॥ तैसेभजनगंगेतयथार्थ॥ उरभतवंद्यपै॥ १६॥ औसेंजैकलोउरस्तवना॥  
 परमज्ञानंदलेसंतदन॥ अन्येरध्यह्यणोन॥ लर्जनिमस्तकडोलविति॥ १७॥ औसेंदखे  
 नश्रीधरे॥ नमस्कारचाललाभेमादरे॥ अणतुह्यरामकथामृतपात्रं॥ सादरश्रवणिवैस  
 लो॥ १८॥ तुल्यज्ञानगंगेचेवोद्यनिर्मला॥ किंविवक्षुमित्विनिधानेकेवका॥ किंद्युपार्णविनिं  
 जाहाङ्गेसबका॥ ह्यमाशिडवरिफडकल॥ केनवविधभक्तिविदिपैसुंदरे॥ किंजनुभ  
 वशास्त्रान्विमंदिरे॥ किंपिकलिज्ञानेद्वे॥ समसमानचहुंकड॥ १९॥ परोपकारनमिं  
 चिंजक्षत्रेनिर्मला॥ परष्ठामुक्तप्रायमराका॥ किंशब्दरबेंग्राहिकेसकढ॥ याग्रथवेष्टि  
 तमिक्कलिं॥ २०॥ किंरामकथाकमकिंचेत्तमरा॥ किंवाजवधानदालेजङ्कधरा॥ माझेशब्द  
 आरपनिर्धारा॥ परित्रिततुल्यितेविलि॥ २१॥ रानवटपाहित्रुक्यथार्थ॥ त्यांचेशब्दजै

कतोंतरस्ता ॥ हेतिशास्त्रजपंडित ॥ वैसेचयेथें जाहाले ॥ २३ ॥ किंवा वैऽबोल तांवाढक ॥  
 अत्यंत संतोषजनक ॥ वैसेशाब्दं चक्रोतुकं ॥ संतजनकीरतिपै ॥ २४ ॥ तरिभातांडि  
 लक्रेंचकरासाचारा ॥ साहरताहदि व्यञ्जकारा ॥ मजलागिंदेउनसाम्वारा ॥ संतजनि  
 गौरवावें ॥ २५ ॥ वकाश्वेत्रपिक्कलेपस्तुपर्ण ॥ परसाहरतापाहुङ्गेवरिघन ॥ चितव्या  
 कुळहेजवर्धण ॥ तेष्यमोढकरपाति ॥ २६ ॥ जालतिसंतश्रोतेचतुरा ॥ तुश्चिंवचनेह  
 सुथाकारा ॥ येणेजामुच्चकर्यचकारा ॥ तसनातेनिर्धारे ॥ २७ ॥ असोआतांवागवद्धि  
 सुहरी ॥ चर्डेलजातांजयोध्याकांडमाडवावरि ॥ लेथिंचियदेनिर्धारे ॥ भक्तचलुरि  
 सेविजो ॥ २८ ॥ मागेअस्तमोध्याईकथन ॥ जानकिप्रणिलिकोहंउखंडुन ॥ यावरैभृयप  
 लि चाहर्पहारण ॥ रघुपतिजालाजयोध्येशि ॥ २९ ॥ कैकैचाबंधुसाहांत ॥ परमप्रता



(h)

॥३॥

पिंसंग्रामजिता॥ प्रानदेउनबहुन॥ लग्नासज्जापि लादशरथे॥ ३०॥ मिथुक्षेचालम  
सोहमापाहुन॥ अयोध्येशिजाकापरतोन॥ कैकैस्त्वयेभरथशत्रुघ्ना॥ नेउओ  
पुन्नाग्रामाते॥ ३१॥ औकोनवेद्युवेववनगयेरित्वयेअवश्यजायेउन॥ परिरायाते  
पुसोन॥ मगदोधांसनेईडो॥ ३२॥ हरारथासपुसेसंग्रामजित॥ मा मासयेकशत्रु  
घ्नभरथ॥ स्वराडासनेउनवरिता॥ अयोध्याखतिधातुं॥ ३३॥ अवउयह्ययेअज्ञ  
पाकसुत॥ कैकैभरथशिसांगता॥ तुन तुकासहावेवरित॥ शत्रुघ्नासद्येउनि  
यां॥ ३४॥ भरथह्ययेश्रीरामावंचुना॥ भजनगमयेकक्षण॥ रघुपतिवेशोवेविण॥  
अरुचेमज्जापिककोहि॥ ३५॥ श्रीरामचंद्रमित्रकोरा॥ मित्रातकरघुविरघंबु ॥ ३६॥  
धरा॥ रामसुरभिमिवष्टसाचार॥ वियोगसहसासोसेना॥ ३७॥ ४५॥

(५८)

श्रीरामशोवासांडुन॥ इतरसुखर्वद्विकोण॥ पियुष्यातुन्यजन्मयाकुन॥ कोणवमन  
 विलोकिन॥ ३७॥ मुलकाफकेहंसटाकुन॥ प्राणंतिहि नमस्त्रोण॥ कल्मदमिचाविहं  
 गमयेउन॥ बास्तुदेवरिनबैसे॥ ३८॥ छलमधुदृग्धसरोवरें॥ जरिसुरभिभरलि  
 अपरें॥ परिजिवनसांडुनजन्मयेण॥ कहातथेनजानि॥ ३९॥ जैसेबोलतांभरथा॥  
 नेत्रिंजालेजश्रुपात॥ मातात्वयेयेकमासपरियंत॥ उमुनयेइसवेन्वि॥ ४०॥ नु  
 लंघवेमात्रुवचन॥ भरथश्रीरामारपुसयेउन॥ मगबोलजानकिमनेमोहन॥  
 बोरलोकरियेइले॥ ४१॥ भरथशत्रुघ्निवेक्ष॥ रघुविरचरणवंहिले॥ वातुरंगह  
 छसिथजाले॥ रथिंकैसलेदोधेहि॥ ४२॥ रायाहशरथाचेकुमर॥ श्रीरामचरणाङ्ग  
 न्नमर॥ मातुकग्रामाशिसत्वर॥ हकभारेशिपावले॥ ४३॥ ईकउजयोध्येशिरामक

(5)

॥४॥

क्षुमणा ॥ सर्वहांकरितगुरुशेषवन् ॥ जैसेहशारथान्येभजन ॥ रघुनंदनकरितसदां ॥  
 ॥४॥ वशिष्ठमुखेनित्यश्रवण ॥ श्रीरामकरितआपण ॥ चलुःशिष्टिकक्षाप्रवि  
 ण ॥ रघुनंदनजाहाला ॥४५॥ मगधनुर्वेदउभ्यास ॥ करिताजालापरमपुरुष ॥ रंग  
 भुमिसाधुनविशेष ॥ युध्यकठशिक्तसे ॥४६॥ वेळुबोरघालितांकुठरा ॥ वीरत  
 जायजैसादुर ॥ तैशिश्रीरामान्विकृतीजान ॥ तर्केजपारवगायवे ॥४७॥ वशिष्ठ  
 नुव्यवाणव्यउवा ॥ जैलेसोडुनदाविभण ॥ त्याहुनिविशेषरघुनंदन ॥ हविकर  
 नगुरशि ॥४८॥ अस्त्रशस्त्रविद्याप्रावण ॥ जालेरामलसुमण ॥ तेपरिक्षापाहवया  
 अंजनंदन ॥ हविकरनगुरशि ॥४९॥ रंगमंडपान्विरचना ॥ नवर्णवेन्विसहस्रव  
 द्वना ॥ तेलेजाविलोक्ति लांसहस्रकिर्ण ॥ परमआन्विच्चवाटहसें ॥५०॥ सज्ञाकंप्रभेसमपुर्ण ॥

॥५३॥

(5A)

कोरिले काश्मीरिपाषाण ॥ त्यन्विपोंविद्धभाघन ॥ सभोंविरचियेलि ॥ ५७ ॥ त्यामा  
 डिससरंगीपाषाण ॥ चक्रेजान्माचौकउयापुर्ण ॥ माजिघालन्मादुरोन ॥ पाहातांजा  
 श्चिर्यवाटल ॥ ५८ ॥ सधिलेपान्चुबंहआगण ॥ गरउपाचेचिड्योत्तिपुर्ण ॥ निकंचिंगज  
 जोडुन ॥ लेचतोक्लेदाविले ॥ ५९ ॥ त्यावरिहिरियांचेसंभ ॥ वरिवेउर्यउथाचिंखयं  
 भा ॥ सुवर्णाचेलुक्लवटसुप्रभा ॥ लेबायमानपसरिले ॥ ६० ॥ गरउपान्चुचेदाडेविरा  
 जलि ॥ आरक्माणिक्किलचाझक्कराता ॥ चयोशोघयर्णाछुति ॥ जैसेगमस्तिवक्ति  
 ने ॥ ६१ ॥ येकावरियेकनवरहण ॥ तथेशत्रिदपाचेनाहिकारण ॥ तथेंगरउपान्चुचे  
 रंवेयुर्ण ॥ शब्दकरिलनवलहे ॥ ६२ ॥ निकंचेमयोरधांवलि ॥ रन्नाचिंगोकांयुक्तेन  
 चलि ॥ उपन्नदेशिन्याक्तपाछुति ॥ चित्रेंजिंत्तिवरिपैतथें ॥ ६३ ॥ खांबसुत्रपुत्रकिया ॥

श्रीरावदे शास्त्रोन्माला विमल, धुले औ तांश्चंद्राचावणी

(6)

१५१

नाचलिगिरक्यादेउनियां॥ वर्षिं कुमुर्तिस्तभां लुनियां॥ हुकारतिक्षणहृषणा॥ ५५  
 औशियारंगमंउपात॥ बैसक्ताजालदिपंवरथा॥ वर्षिष्ठादि क्रुषिसमस्ता॥ अष्टाधिका  
 रिभाणिप्रज्ञा॥ ५६॥ जोक्तंधरावाटेत्तख्तां॥ पाहाति कौंशाल्लादिमाता॥ श्रीरामेंवि  
 यासाधिल्लासमस्ता॥ देखावयाअव स्थासकंवंशि॥ दुग॥ जैसानहृत्रांमाजिभत्रि  
 सुता॥ तैसासमेसराजाद्वारथा॥ इंद्रजनके ब्रहस्पति बुधिवंता॥ तैसावेद्वित  
 बैसक्ता॥ दुग॥ असोरंगमंउपायुढेदोद्य-लण॥ श्रीरामलहृषुमणा॥ यांचबंधओंगणि  
 येउन॥ उम्भेगकलेतेधवां॥ दुरा॥ जैसाद्वाराणिचंउकिर्प॥ कींबयर्णावरजाणि  
 रमावर॥ मण॥ किंमेरमांदारस्येंधरन॥ उम्भेगकलेरणांगणि॥ दुरा॥ साह्यांत  
 द्वाषनारायेण॥ अवलारयुरुषदोद्यज्ञण॥ अनंतजन्मित्रेत्याचरण॥ दशरथाचेष्टाजालें॥ ५७  
 ५८॥

"See Patalavadee Sevach, Mandau Bhritis and the Yashnavi  
 Rao manuscript, Palitana Library, Vol. 1, No. 1, p. 100  
 "See Patalavadee Sevach, Mandau Bhritis and the Yashnavi  
 Rao manuscript, Palitana Library, Vol. 1, No. 1, p. 100

कोटि कं ह पे ला व प्य रवा ण ॥ ते जा सउ प्णा वा सरमण ॥ किं जनं त वि ज्ञा पि को नि ॥ श्री राम  
 सप वो ल के ॥ ६५ ॥ तो ला व प्य मुत सा गर ॥ ज जा न बा हो श्री रघु विर ॥ उस भा पि पि त्या स  
 न मस्का र ॥ करन दा स्त्रें कं दि लि ॥ ६६ ॥ ना न बहु नि जा स ढो नि रघु पति ॥ हवि यु ध्या  
 चि अ गाध गति ॥ रथ के रि ना न रि लि ॥ वि स्म न पा हा लि ज न सर्व ॥ ६७ ॥ मग हवि कु  
 ज र या न के रि ॥ स वे चतुर गा र ढहा यज उक्ति ॥ रथ च मक हवि ना ना परि ॥ आ ल  
 ल चक्र डो से पै ॥ ६८ ॥ चरण यु ध्य अ स्त्रा यु ध्य ॥ श्री स्त्र रि लि ना ना वि ध ॥ मल्ल मे ष कु  
 ज र यु ध्य ॥ व्या ध्रश्चिं कु यु ध्य गति ॥ ६९ ॥ है कर ष मन कु यु ध्य ॥ न क में उक्त यु ध्य वि षह ॥  
 जं त रिक्ष भु मिल प्रसि ध्य ॥ शम हम क का यु ध्य द वि लि ॥ ७० ॥ इक्ति पत्रु पं त तो मर ॥  
 शुक्ति पर घ लहु डि चक्र ॥ कं दु कमिं उ प्राका व ज्ञ ॥ हवि रघु विर गति तया व्या ॥ ७१ ॥



(X)

॥६॥

पाषाणजश्चिह्ने लामुद्रल ॥ शतद्विकुंतफरशसरक ॥ यमद्विद्वयुध्य सववा  
यंत्रमंत्रयुध्यगति ॥ ७२ ॥ येकसेतितांचबाण ॥ कोटयावधि कावेलयापासुन ॥ सक  
कचमुचेशिरछेहन ॥ येकाचबाणें करावें ॥ ७३ ॥ अनिजस्त्रपर्यनास्त्र ॥ वातपर्वत  
आणिवद्वा ॥ मायात्रहम्हेश्वर ॥ ७४ ॥ तुलहनुमंतस्त्रैस्वास्त्रपै ॥ ७५ ॥ सिंहपर्वताणिग  
सेत्तास्त्र ॥ पापनामगांधर्वीस्त्र ॥ कामवराग्यतारकासुर ॥ हाविरघुविरजस्त्रपै  
॥ ७६ ॥ त्रह्मगिरविश्वलित ॥ यामरुसामतिहविरघुनाथ ॥ तैसेंचकरिसुमित्रा  
सुल ॥ मानदशरथोलवि ॥ ७७ ॥ वातरदउठोनिलेजवसरि ॥ श्रीरामसौमित्रास  
हहईधरि ॥ दशरथाचाभानंदजंबरि ॥ नमायेतेकं सर्वथां ॥ ७८ ॥ सभाविसर्युनि ॥ ७९ ॥  
दशरथ ॥ वशिष्ठसौमित्ररघुनाथ ॥ त्रवेशलेजालेसदनात ॥ आनंदयुक्तसर्वहि ॥ ७१ ॥

॥४०॥५॥

(३८)

यकेदिवशिंजजपाक्ननेहना॥ दर्पणिविलोक्निजवहना॥ तोहरींतभुञ्जकेशदेखेन॥ का  
यबोलताजाहृता॥ ७३॥ ल्लणेशिव्रबोलावाब्रह्मनंहना॥ अह्यधिकारिप्रजाजाणा॥ सक  
क्वेकारवैसासघन॥ विवेकसंप्रब्लथारथोर॥ ८०॥ सककासवैसउनयेकांति॥ निजगु  
ह्यपुसकौशान्मापति॥ ल्लणेराजद्यावेश्रीरामान्माति॥ औसेंचितिंवाटत्वें॥ ८१॥ राज्या  
धिकारिरघुनाथ॥ जोगुणसमुद्रप्रलभाके॥ जोधीरविरुद्धारदेख॥ लावण्यसागर  
श्रीराम॥ ८२॥ अनंतजन्मिचेतपालों॥ तोहरामलमाठनिक॥ राज्यद्यावेंहोता  
ल्काक॥ सुमुहुर्लपाहोनियां॥ ८३॥ औकानदझारथाचेवचन॥ संतोषलाभ्रह्मनंहना॥  
पानवलेप्रजाजन॥ ल्लणतिध्यन्यदझारथा॥ ८४॥ विशिष्टादि त्रृपिसमस्त॥ पाहोनि  
सुमुहुर्ल॥ चैत्रमासअतिविरव्यात॥ एकपुर्व्ययोगसाधिला॥ ८५॥ श्रीरामासद्या

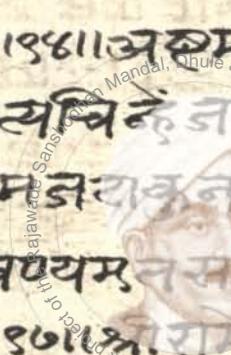
॥७॥

(8)

वयारजपद् ॥ सुमुहुर्ते नेमिलाबतिवरिष्ठ ॥ सर्वसामग्रिवशिष्ठ ॥ सिद्धकरिताजा  
 हृला ॥ अवेतवर्णं चौहलगज ॥ श्विरवर्णं जाणि लाहूयराज ॥ वामे छत्रं तेजः पुं  
 ज ॥ प्रगांकवर्णसाजिरे ॥ ८८ ॥ सस्प्रतिकामेचयच्छवपरिकर ॥ सस्समुद्दिच्छेजा  
 पिलेनिरा ॥ नुलनसिंकूसनपवित्र ॥ तुतनष्टत्रेनिर्मिलि ॥ ८९ ॥ दिव्यमंडपनिर्मु  
 ना ॥ लेथैमाडिलेशिंकूसन ॥ जपासथालदहिव्यब्राह्मण ॥ वेहोनारायणसांक्षांत ॥  
 ॥ ९० ॥ उपन्नेदशिच्छेराजेश्वर ॥ जाग्रन क्रक्केराजकुमर ॥ येतेजालेसल्वर ॥  
 जपारकरभारधेउनियां ॥ ९१ ॥ आगंहमयज्योध्यानगर ॥ सदनेंश्रगारिलिसुं  
 हर ॥ अयोध्यावासिनारिनर ॥ समग्रजंकारमंडित्वा ॥ ९२ ॥ राजमंहिरेश्रगारिलि ॥ ९३ ॥  
 विशेष ॥ वरेष्टकतिरलजउक्केस ॥ उणेजाणिप्तिउडगणास ॥ रजनिमाजिसतेजें ॥ ९४ ॥

Rajputade Sastbohan Mandir, Dhule, and the Yashwantrao Chhatrapati Shahu Museum  
 "Join the project to digitise the manuscript"

येकांतिंबोलाउनरघुनाथ॥गुह्यगोष्ठीसांगेदशरथ॥व्यणेवारेमज्जरहिंपित्राजालि  
 बहुत॥काढविपरितपुढेहिसे॥१५॥अहमस्त्रानिसनेश्वरनिष्ठिलि॥द्वादशास्त्रा  
 नितोब्रह्मस्पति॥मज्जलाणि मत्यचिन्दं जाणवति॥वैसरघुपतिशिं कासनि॥१६॥  
 रामातुम्भिमज्जवाटतेखंति॥मज्जयकनयांरघुपति॥दुरज्ञाशिलनिष्ठिलि॥  
 हुंचचितिंवाटते॥१७॥तरैलावध्यमनसागरा॥तमाकनिझाचारगत्रा॥रामाघनः  
 शामगाङ्का॥राजभारचालविं॥१८॥क. रामवेदिलपित्रुचरण॥व्यणमज्जाजात्र  
 माणा॥रामासतेदिवशिंउपोषण॥करविवशिष्ठस्तेदिवशिं॥१९॥रघुनाथाहुतेहा  
 ने॥जपारकरविलिब्रह्मनंदनें॥रामजानकिहोयेजणो॥कुञ्चासनित्रहुडलि॥२०॥  
 जोपुराणपुरवपरब्रह्म॥त्याहातेंऋषिकरविहोम॥आहुतिघालितपुरवेतम॥



"Joint Project of the  
Sant Gadge Baba Raigad  
Mandal, Shule and the  
Yogeshwar Mandir  
Trust, Mumbai."

(१)

॥८॥

हृष्णं तउत मबै करोते ॥ १०० ॥ चक्रोरा चेसुखिं अमृतधारा ॥ वरुषे हौसारो हिणिवरा ॥ किं  
 थेनुपाक्षाद्य लिसत्वरा ॥ वद्धासत्तसहावया ॥ १ ॥ किं बाढ़ कम्भियासुखात् ॥ माता  
 सनपाने करि त्तस्य ॥ किं जद्विंदुवाकिज्जक्षस्मात् ॥ चातकि सुखिं हृष्णेने ॥ २ ॥ अै  
 शिं अवहा ने रामटा किता ॥ धुम्रेने बजाले आरक्ष ॥ यज्ञनारायणज्ञात्तस्य ॥ राय  
 वहस्ते करोनियां ॥ ३ ॥ हौशिंगं गाज्जपीभागिरथि ॥ तैशाकौशल्याज्ञाणिसुमित्रा  
 सति ॥ विप्रांसदाने अपार हैति ॥ अनन्दच्छिति न समाध ॥ धादशरथाशि  
 विनविलक्षुपणा ॥ मिश्रीरामहोवाक्षरना ॥ औकानसंतोष अजनंदन ॥ कुरवाइव  
 इनसोमित्राच्चे ॥ ५ ॥ अयोध्यानगरवेशुनज्ञाणा ॥ उत्तरल्याराजयांच्यादथुन ॥ को  
 णकरितयांच्छिगणणा ॥ पाहालांनयनाभुक्तये ॥ ६ ॥ श्रीरामवैसल्याराजपद्धि ॥

Joint Library of Sahadevan Mandir, Puri and the "Rashtriya Sanskrit Akademi", New Delhi.

॥८॥

(४०)

तोस्योह कापाहा वया हि क्षिणि ॥ सक कल सुरां च्या कोटि ॥ विमाना रढ पाहा ति ॥ ७ ॥ तवं विते  
 लक्ष्म घन सुखर ॥ चतुर्विध वाद्या चाग जर ॥ नादें कोदले जंबर ॥ चिता तुर सुरजा ले ॥ ८ ॥  
 निझेर विनविति कम कोङवा ॥ दद्धार अराज समर्थि राघवा ॥ आमुचे बंद सुट के चावरवा ॥  
 विचार काहिं दिसेगा ॥ ९ ॥ ईद्रप हातु अराज बंपुवा ते सांडु नियंशि ताधव ॥ कासयाये  
 ईन्द्र दद्धा ग्रीवां ॥ वथा वया कारणे ॥ १० ॥ तरला मंग कळ झेनि चावर ॥ भक्तों लागि जाला सा  
 कारा ॥ तरि तपो वनाये रघुविर ॥ औसा वच रयोजा वा ॥ ११ ॥ मग विरंचि सागे विकल्पा  
 शि ॥ तुवां सत्वर जावें जयो ध्येशि ॥ प्रवद्धा वेक केचे मान शि ॥ विद्धार ड्याशि करावें ॥ १२ ॥  
 विकल्पह्यणे तेवेकं ॥ अयोध्ये माजि परम सोहुका ॥ दुःख चावया सकं ॥ माज्जेन तेये  
 न जाववे ॥ १३ ॥ माज्जा प्रवेश होतां तेथा ॥ बहुतां सहोई लप्राणांत ॥ मांडे लये कविजा

१४१

(P)

कांत॥ माझे न ते थें न वजा बवे॥ १५॥ शितक होई लवड वाल का। मधुरता थरि लहानुक॥  
 परि मडविक न्मा चें बढ़॥ स्थिण न कें क न्मांति॥ १५॥ देव वृष्णि ति लुजविण॥ हें कार्यसा  
 ञि लकवण॥ जास्त्रास सोडविलवंदिनुन॥ घेर्इ पुण्यये वढें॥ १६॥ जे सें जे क तांचिव  
 चन॥ विकल्प निधा लाते थुन॥ उवक के ल अयोध्या पहण॥ परि जांत प्रवशन करे  
 ॥ १७॥ अयोध्या वाशि पुण्यशि का। स अनर्ह दसात्ति क॥ व्रेम क॥ ड्या कडे पांहो न श  
 के काढ॥ लेथें विकल्प प्रवेश ना॥ १८॥ जासि वह भोजा कोटे प्रमाण॥ ने णति पर रोहो  
 षुण॥ सहां सारा सार विचार श्रवण॥ तथा विकल्प प्रवेश ना॥ १९॥ जे निःशिमगुरुभ  
 का॥ ड्जे प्रातपि तयां शिभ जल॥ जे अनन्य ब्राह्मण शि वंदिल॥ ते थें वि॥ २०॥ दयात  
 प जे दस वलां दिन॥ जं ध पं गुडव ध्यस्थि प॥ त्या सपाविव स्वजन्म॥ ते थें वि॥ २१॥

Rajavade Seochan Mandir, Dangs and the Yashwant Rao  
 "Joint Project of the State Election Commission of Maharashtra and the Mumbai"

॥४०॥

(५८)

सहोआवेडुरिजजन॥श्रवणमननकीरकिर्तन॥परद्व्यजासत्तणासमान॥तेथेंवि॥  
॥२३॥ सर्वांभुलिंयेकरघुनाथ॥जेशिजयाशिपुर्णप्रवित॥प्रपंचिंवर्तनांचित्तरहित॥  
तेथेंवि॥२४॥ जेब्रह्मानंदेयुर्जधोल॥जेआपणापणाविसरल॥तेथेंविकक्काचेंब  
ठनच्छोल॥कल्मांतिफिसर्वथां॥२५॥ परवल्लनासात्तवत॥जेवहप्रतिवाहिमुकेहा  
त॥जेईश्वरस्वरपयाहातिसंवा॥तेथेंवि॥२६॥ असोपुण्यवंतजयोध्येचेंजन॥सं  
सविकल्मदेखतांजायपकोन॥प्रवेत्तावया अयोध्यापहन॥धिरनधरवेसवेथां॥  
॥२७॥ तोकैकैचिहाशिमंथरा॥तेपुर्विचद्विषरघुविरा॥परमयापिषतेशितावरा॥स  
र्वदाहिनिंहित॥२८॥ प्रातःकाढिंअहिल्योधार॥जेजेसञ्चसतांरामचंड॥ज्ञातितां  
बकेंचकेर॥रामावरिधालितस॥२९॥ तोअंगावरियेतांकेर॥दैतहातहोईलरघुविरा॥

ल्यणोनदाशितेऽपवित्रा। रामावरिरजउडवि॥२३॥ मगरामाचेन्द्रोपाई॥ व्यणेमजला  
 ग्निउत्रापहै॥ मगजगदानंदकंदतेसमई॥ कायबोलताजाहाला॥ ३३॥ व्यणेपुढिलेभ  
 वतरिंयुर्ण॥ कंसवथामथुरेयेइब॥ लेकोत्तनउद्धरिन॥ दिव्यकरिनरपतुझें॥ ३४॥ ज  
 सोजयोध्येबाहेर॥ पुष्पवटिकायरमसुंदरा सदाहासुफळतरवर॥ विकल्पसत्त्वरओ  
 लातेथें॥ ३५॥ जोभजनवनछेदककुरा अनेहाहककर्पुरवेश्वान्जर॥ किष्मिति  
 मेघविहारकसमिर॥ परमतिब्रह्मजा॥ ३६॥ हासजनप्रार्थामारकमांग॥ परदेह  
 घनिट्ठाभक्षककाग॥ होषवारतांतिलभुजग॥ धुसधुशितविकल्पहा॥ ३७॥ लोम  
 छरवनिचारकथोर॥ किंनिर्देयसमुद्रिंचानक्र॥ किंपरनिहाजकरकरवर॥ विकल्प  
 साचारजाणिले॥ ३८॥ विकल्पनकेतोश्वान॥ धावेसाधुसंतांवरि वसवसुन॥ ३९॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)